

M.A. (3rd Semester) Examination Study Guide

Subject: International Economics (अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र)

Paper Code: A080901T | 50 Comprehensive **Short Answer** Questions & Detailed Solutions

इकाई 1: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांत (Theories of International Trade)

प्रश्न 1: एडम स्मिथ के निरपेक्ष लाभ सिद्धांत (Absolute Advantage Theory) की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

उत्तर: एडम स्मिथ ने 1776 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'The Wealth of Nations' में निरपेक्ष लाभ सिद्धांत का प्रतिपादन किया। यह सिद्धांत क्लासिकल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार माना जाता है।

1. मुख्य मान्यताएँ:

- दो देश और दो वस्तुएँ (2x2 मॉडल)।
- उत्पादन का एकमात्र साधन श्रम है (Labour Theory of Value)।
- उत्पादन लागत स्थिर रहती है तथा व्यापार में कोई परिवहन लागत नहीं आती।
- दोनों देशों के बीच पूर्ण स्वतंत्र व्यापार (Free Trade) विद्यमान है।

2. सिद्धांत का सार:

यदि देश A किसी वस्तु (जैसे कपड़े) का उत्पादन देश B से कम श्रम लागत पर कर सकता है, और देश B किसी अन्य वस्तु (जैसे चावल) का उत्पादन देश A से कम लागत पर कर सकता है, तो दोनों देशों के पास निरपेक्ष लाभ है। दोनों देशों को अपनी-अपनी निरपेक्ष लाभ वाली वस्तु में विशिष्टीकरण (Specialization) करके व्यापार करना चाहिए, जिससे वैश्विक उत्पादन और उपभोग दोनों में वृद्धि होगी।

3. आलोचना:

यह सिद्धांत उस स्थिति की व्याख्या नहीं कर पाता जहाँ एक ही देश दोनों वस्तुओं के उत्पादन में निरपेक्ष रूप से अधिक कुशल होता है।

प्रश्न 2: डेविड रिकार्डो के तुलनात्मक लागत सिद्धांत (Comparative Cost Theory) की विस्तृत समीक्षा कीजिए।

उत्तर: एडम स्मिथ के सिद्धांत की सीमाओं को दूर करने के लिए डेविड रिकार्डो ने 1817 में '*Principles of Political Economy and Taxation*' में तुलनात्मक लागत सिद्धांत प्रतिपादित किया।

1. मूल अवधारणा:

रिकार्डो के अनुसार, भले ही एक देश दोनों वस्तुओं के उत्पादन में दूसरे देश की तुलना में निरपेक्ष रूप से अधिक कुशल हो, फिर भी दोनों देशों के बीच व्यापार लाभदायक हो सकता है। प्रत्येक देश उस वस्तु के उत्पादन में विशिष्टीकरण करेगा जिसमें उसका तुलनात्मक लाभ (Comparative Advantage) सबसे अधिक हो, और उस वस्तु का आयात करेगा जिसमें उसकी तुलनात्मक हानि सबसे कम हो।

2. उदाहरण:

यदि इंग्लैंड और पुर्तगाल कपड़ा और शराब का उत्पादन करते हैं, और पुर्तगाल दोनों में श्रेष्ठ है, फिर भी यदि पुर्तगाल शराब में इंग्लैंड से अधिक कुशल है, तो पुर्तगाल शराब बनाएगा और इंग्लैंड कपड़े में ध्यान केंद्रित करेगा।

3. सीमाएँ:

यह केवल श्रम लागत को मानता है और पूँजी, भूमि, परिवहन लागत तथा बहु-साधनीय यथार्थ की उपेक्षा करता है।

प्रश्न 3: हेबर्लर के अवसर लागत सिद्धांत (Opportunity Cost Theory) का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर: गॉटफ्राइड हेबर्लर ने 1936 में रिकार्डो के श्रम-मूल्य सिद्धांत की अवास्तविक मान्यताओं को त्यागते हुए अवसर लागत सिद्धांत प्रस्तुत किया।

1. अवसर लागत की परिभाषा:

वस्तु X की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए वस्तु Y की जितनी मात्रा का त्याग करना पड़ता है, वही X की अवसर लागत कहलाती है।

2. उत्पादन संभावना वक्र (PPC) द्वारा विश्लेषण:

- **स्थिर अवसर लागत (Constant Costs):** PPC एक सीधी रेखा होती है। विशिष्टीकरण पूर्ण होता है।
- **बढ़ती अवसर लागत (Increasing Costs):** PPC मूल बिंदु की ओर नतोदर (Concave) होती है। वास्तविक जीवन में यही स्थिति सर्वाधिक पाई जाती है।
- **घटती अवसर लागत (Decreasing Costs):** PPC उन्नत (Convex) होती है।

निष्कर्ष: हेबर्लर का सिद्धांत व्यापार विश्लेषण को अधिक व्यावहारिक और आधुनिक बनाता है।

प्रश्न 4: हेक्सर-ओहलिन (Heckscher-Ohlin Model) सिद्धांत की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

उत्तर: हेक्सर-ओहलिन मॉडल (H-O Model) को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आधुनिक सिद्धांत या साधन-प्रचुरता सिद्धांत (Factor Endowment Theory) भी कहा जाता है।

1. मुख्य मान्यताएँ (2x2x2 मॉडल):

2 देश, 2 वस्तुएँ, और 2 साधन (श्रम और पूँजी)। तकनीक समान है, परंतु देशों में साधनों की प्रचुरता भिन्न है।

2. सिद्धांत का मूल निष्कर्ष:

श्रम-प्रचुर देश (Labour-abundant country) श्रम-गहन वस्तुओं का निर्यात करेगा और पूँजी-गहन वस्तुओं का आयात करेगा। इसके विपरीत, पूँजी-प्रचुर देश पूँजी-गहन वस्तुओं का निर्यात करेगा।

3. क्लासिकल सिद्धांत से श्रेष्ठता:

यह न केवल व्यापार के लाभ बताता है बल्कि व्यापार के कारण (साधन कीमतों में अंतर) का भी सटीक वैज्ञानिक विश्लेषण करता है।

प्रश्न 5: लियोन्टिफ विरोधाभास (Leontief Paradox) क्या है? यह H-O सिद्धांत पर क्या प्रश्न उठाता है?

उत्तर: वासिली लियोन्टिफ ने 1953 में अमेरिका के 1947 के इनपुट-आउटपुट आँकड़ों का विश्लेषण करके H-O सिद्धांत का व्यावहारिक परीक्षण किया।

1. विरोधाभास क्या था?

H-O सिद्धांत के अनुसार अमेरिका (जो कि एक पूँजी-प्रचुर देश है) को पूँजी-गहन वस्तुओं का निर्यात और श्रम-गहन का आयात करना चाहिए था। परंतु लियोन्टिफ के निष्कर्षों से पता चला कि अमेरिका **श्रम-गहन वस्तुओं का निर्यात** और पूँजी-गहन वस्तुओं का आयात कर रहा था।

2. विरोधाभास के स्पष्टीकरण:

- अमेरिकी श्रम की उत्पादकता (मानव पूँजी) विदेशी श्रम से बहुत अधिक थी।
- अमेरिका की टैरिफ नीतियाँ श्रम-गहन उद्योगों को अधिक संरक्षण देती थीं।
- शोध एवं विकास (R&D) में अत्यधिक निवेश।

प्रश्न 6: स्टॉल्पर-सैमुअलसन प्रमेय (Stolper-Samuelson Theorem) का विवेचन कीजिए।

उत्तर: 1941 में वोल्फगैंग स्टॉल्पर और पॉल सैमुअलसन द्वारा विकसित यह प्रमेय बताता है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार या संरक्षण (Tariff) का साधनों की वास्तविक आय पर क्या प्रभाव पड़ता है।

1. मुख्य कथन:

यदि आयातित वस्तु पर टैरिफ लगाया जाता है, तो उस वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त **दुर्लभ साधन (Scarce Factor)** की वास्तविक आय में निरपेक्ष वृद्धि होगी, जबकि **प्रचुर साधन (Abundant Factor)** की वास्तविक आय में गिरावट आएगी।

2. नीतिगत महत्व:

यह प्रमेय स्पष्ट करता है कि व्यापार नीतियों से देश के भीतर विभिन्न वर्गों (श्रम बनाम पूँजीपति) के बीच आय का पुनर्वितरण कैसे होता है।

प्रश्न 7: साधन-कीमत समानीकरण प्रमेय (Factor Price Equalization Theorem) को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: पॉल सैमुअलसन ने सिद्ध किया कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केवल वस्तुओं की कीमतों को ही समान नहीं बनाता, बल्कि विभिन्न देशों में साधनों के प्रतिफल (मजदूरी और ब्याज) को भी समान करने की दिशा में कार्य करता है।

1. कार्यप्रणाली:

जब श्रम-प्रचुर देश श्रम-गहन वस्तुओं का निर्यात करता है, तो वहाँ श्रम की माँग बढ़ती है जिससे मजदूरी (w) बढ़ती है। पूँजी-प्रचुर देश में श्रम-गहन आयात बढ़ने से वहाँ मजदूरी गिरती है। अंततः दोनों देशों में मजदूरी दरें समरूप हो जाती हैं ($w_A = w_B$)।

2. वास्तविक सीमाएँ:

परिवहन लागत, व्यापार बाधाओं, और तकनीकी भिन्नताओं के कारण वास्तविक दुनिया में यह समानीकरण आंशिक ही हो पाता है।

प्रश्न 8: रिबचिंस्की प्रमेय (Rybczynski Theorem) की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

उत्तर: 1955 में टी.एम. रिबचिंस्की द्वारा प्रतिपादित यह प्रमेय साधन प्रचुरता में परिवर्तन का उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करता है।

1. प्रमेय का नियम:

यदि वस्तुओं की सापेक्षिक कीमतें स्थिर रहें और किसी एक साधन (जैसे श्रम) की पूर्ति में वृद्धि होती है, तो उस साधन का तीव्रता से उपयोग करने वाली वस्तु के कुल उत्पादन में ****निरपेक्ष वृद्धि**** होगी और दूसरे साधन का उपयोग करने वाली वस्तु के उत्पादन में ****निरपेक्ष कमी**** आएगी।

2. अनुप्रयोग:

यह प्रवासी श्रम के आगमन या विदेशी पूँजी निवेश के आर्थिक परिणामों को समझने में सहायक है।

प्रश्न 9: रेमंड वर्नोन का उत्पाद जीवन चक्र सिद्धांत (Product Life Cycle Theory) समझाइए।

उत्तर: 1966 में रेमंड वर्नोन द्वारा दिया गया यह सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में नवप्रवर्तन और तकनीक के हस्तांतरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

1. उत्पाद के 3 चरण:

- नया उत्पाद चरण (New Product Stage):** उत्पादन और उपभोग उच्च-आय वाले नवप्रवर्तक देश (जैसे अमेरिका) में होता है।
- परिपक्व उत्पाद चरण (Maturing Product Stage):** तकनीक का मानकीकरण होता है, विदेशी माँग बढ़ती है और अन्य विकसित देशों में उत्पादन शुरू होता है।
- मानकीकृत उत्पाद चरण (Standardized Product Stage):** उत्पादन विकासशील देशों में चला जाता है जहाँ श्रम सस्ता है। मूल आविष्कारक देश अब इस वस्तु का ****आयातक**** बन जाता है।

प्रश्न 10: पॉल क्रुगमैन का आधुनिक व्यापार सिद्धांत (New Trade Theory - NTT) क्या है?

उत्तर: पॉल क्रुगमैन ने 1970/80 के दशक में दर्शाया कि पारंपरिक सिद्धांतों के विपरीत समान साधन और तकनीक वाले देश भी आपस में बड़े पैमाने पर व्यापार करते हैं। इसके लिए उन्हें 2008 में नोबेल पुरस्कार मिला।

1. आधारभूत तत्त्व:

- पैमाने की आंतरिक मितव्ययिताएँ (Internal Economies of Scale):** बड़े पैमाने पर उत्पादन से प्रति इकाई लागत घटती है।
- अपूर्ण प्रतिस्पर्धा (Monopolistic Competition):** उपभोक्ता उत्पाद विविधीकरण (Brands) चाहते हैं।

2. अंतर-उद्योग व्यापार (Intra-Industry Trade):

यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि जर्मनी और फ्रांस दोनों कारें क्यों बनाते हैं और एक-दूसरे को निर्यात/आयात करते हैं।

प्रश्न 11: व्यापार की शर्तों (Terms of Trade - TOT) की अवधारणा एवं इसके प्रकार समझाइए।

उत्तर: व्यापार की शर्तें किसी देश के निर्यात मूल्यों और आयात मूल्यों के अनुपात को दर्शाती हैं। यह दर्शाती है कि निर्यात की एक इकाई के बदले आयात की कितनी इकाइयाँ प्राप्त होती हैं।

$$\text{TOT} = (\text{Export Price Index} / \text{Import Price Index}) \times 100$$

प्रमुख प्रकार:

- **निवल बारटर शर्तें (Net Barter TOT):** $T_n = (P_x / P_m) \times 100$
- **सकल बारटर शर्तें (Gross Barter TOT):** $T_g = (Q_m / Q_x) \times 100$
- **आय व्यापार शर्तें (Income TOT):** $T_y = (P_x / P_m) \times Q_x$ (यह देश की आयात क्षमता दर्शाती है)।
- **एकल साधन शर्तें (Single Factoral TOT):** निर्यात क्षेत्र की उत्पादकता में सुधार को शामिल करती है।

प्रश्न 12: व्यापार की शर्तों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विस्तृत विवरण दीजिए।

उत्तर: किसी देश की व्यापारिक शर्तों के अनुकूल या प्रतिकूल होने में निम्नलिखित कारक निर्णायक भूमिका निभाते हैं:

1. **माँग एवं पूर्ति की लोच:** यदि किसी देश के निर्यातों की विदेशी माँग लोचदार है, तो उसकी व्यापार शर्तें बेहतर होंगी।
2. **तकनीकी प्रगति:** यदि तकनीकी सुधार निर्यात क्षेत्र में होता है, तो निर्यात कीमतें गिर सकती हैं (शर्तें प्रतिकूल हो सकती हैं)।
3. **टैरिफ एवं कोटा:** आयात कर लगाने से आयात कीमतें घट सकती हैं और व्यापार शर्तें देश के अनुकूल हो जाती हैं।
4. **आय का स्तर:** देश में राष्ट्रीय आय बढ़ने से आयात माँग बढ़ती है, जो व्यापार शर्तों को प्रभावित करती है।

प्रश्न 13: प्रस्ताव वक्र (Offer Curves) द्वारा व्यापार संतुलन का निर्धारण समझाइए।

उत्तर: प्रस्ताव वक्र (जिसे एजवर्थ-मार्शल प्रस्ताव वक्र भी कहा जाता है) यह दर्शाता है कि एक देश दूसरी वस्तु की विभिन्न मात्राओं के बदले अपनी वस्तु की कितनी मात्रा का निर्यात करने को तैयार है।

संतुलन का निर्धारण:

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का संतुलन और सापेक्षिक कीमतें (Terms of Trade Line) उस बिंदु पर निर्धारित होती हैं जहाँ दोनों देशों के **प्रस्ताव वक्र एक-दूसरे को काटते हैं**। यह पारस्परिक माँग (Reciprocal Demand) के सिद्धांत को रेखांकित करता है।

प्रश्न 14: सिंगर-प्रीनिश परिकल्पना (Prebisch-Singer Hypothesis) का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर: राउल प्रीनिश और हंस सिंगर ने प्रतिपादित किया कि प्राथमिक वस्तुओं (कृषि/खनिज) का निर्यात करने वाले विकासशील देशों की व्यापार की शर्तें दीर्घकाल में निर्मित वस्तुओं का निर्यात करने वाले विकसित देशों की तुलना में **लगातार प्रतिकूल (सड़ती) होती जाती हैं**।

कारण:

- प्राथमिक वस्तुओं की माँग की आय-लोच ($e_y < 1$) कम होती है (एंजिल का नियम)।
- विकसित देशों में एकाधिकार तथा ट्रेड यूनियनों के कारण कीमतें नीचे नहीं गिरतीं।
- कृषि में तकनीकी सुधारों का लाभ कम कीमतों के रूप में विदेशी क्रेताओं को चला जाता है।

प्रश्न 15: जगदीश भगवती की निर्धनीकारक वृद्धि (Immiserizing Growth) अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: प्रो. जगदीश भगवती ने 1958 में यह सिद्ध किया कि आर्थिक वृद्धि हमेशा कल्याणकारी नहीं होती; कभी-कभी यह देश को पहले से अधिक निर्धन बना सकती है।

परिस्थिति:

यदि कोई देश अपने ****निर्यात क्षेत्र में भारी वृद्धि**** करता है, और विश्व बाजार में उसके निर्यात की माँग अत्यधिक अलोचदार (Inelastic) है, तो निर्यात की कीमतें इतनी बुरी तरह गिर जाती हैं कि वृद्धि से हुआ लाभ व्यापार की शर्तों में गिरावट के नुकसान से कम पड़ जाता है। देश का कुल आर्थिक कल्याण घट जाता है।

प्रश्न 16: तकनीकी प्रगति का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: तकनीकी प्रगति उत्पादन लागत घटाकर और नए उत्पादों का सृजन करके व्यापार को गहराई से प्रभावित करती है।

तकनीकी प्रगति के 3 प्रकार (हिक्स के अनुसार):

- **श्रम-बचत तकनीकी प्रगति:** पूँजी की सीमांत उत्पादकता अधिक बढ़ाती है।
- **पूँजी-बचत तकनीकी प्रगति:** श्रम की उत्पादकता अधिक बढ़ाती है।
- **तटस्थ (Neutral) तकनीकी प्रगति:** दोनों साधनों की उत्पादकता समान अनुपात में बढ़ाती है।

तकनीकी प्रगति से देश का उत्पादन संभावना वक्र (PPC) बाहर की ओर खिसक जाता है, जिससे व्यापार की मात्रा बढ़ती है।

प्रश्न 17: आर्थिक वृद्धि का व्यापार संतुलन (Balance of Trade) पर प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: आर्थिक वृद्धि का व्यापार संतुलन पर प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि वृद्धि किस क्षेत्र में हुई है:

- **निर्यात-उन्मुख वृद्धि (Export-biased growth):** निर्यातों का उत्पादन बढ़ाती है, जिससे शुरू में व्यापार संतुलन सुधरता है परंतु कीमतें गिरने पर शर्तें बिगड़ सकती हैं।
- **आयात-प्रतिस्थापन वृद्धि (Import-replacement growth):** आयातों पर निर्भरता कम करती है, जिससे व्यापार संतुलन में प्रत्यक्ष सुधार होता है।

प्रश्न 18: व्यापार से प्राप्त लाभ (Gains from Trade) का मापन कैसे किया जाता है?

उत्तर: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से मिलने वाले लाभ को दो मुख्य भागों में बाँटा जाता है:

1. **विशिष्टीकरण से लाभ (Gain from Specialization):** संसाधनों का अधिक कुशल आवंटन होता है।
2. **विनिमय से लाभ (Gain from Exchange):** देश अपनी उत्पादन सीमा (PPC) के बाहर के उपभोग बिंदु (CIC) को प्राप्त कर सकता है।

इसे सामुदायिक उदासीनता वक्र (Community Indifference Curve) के उच्च स्तर पर पहुँचने से मापा जाता है।

प्रश्न 19: स्थैतिक लाभ (Static Gains) और प्रावैगिक लाभ (Dynamic Gains) में अंतर बताइए।

उत्तर:

प्रकृतिमुख्य घटक

साधनों और तकनीक को स्थिर मानकर प्राप्त होने वाला अल्पकालिक लाभ।	दीर्घकालिक आर्थिक विकास से मिलने वाला लाभ।	
उपभोग में वृद्धि और मौजूदा संसाधनों का बेहतर आवंटन।	तकनीक का हस्तांतरण, बाजार का विस्तार, और निवेश में वृद्धि।	

प्रश्न 20: विकासशील देशों के लिए व्यापार की शर्तों से जुड़ी प्रमुख समस्याएँ क्या हैं?

उत्तर: विकासशील देश (LDCs) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कई वैश्विक विषमताओं का सामना करते हैं:

- प्राथमिक कृषि उत्पादों की कीमतों में अत्यधिक उतार-चढ़ाव।
- विकसित देशों द्वारा लगाए गए गैर-शुल्क अवरोध (NTBs)।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किया जाने वाला हस्तांतरण मूल्य निर्धारण (Transfer Pricing)।
- सिंथेटिक और कृत्रिम विकल्पों के आने से प्राकृतिक कच्चे माल की माँग में कमी।

प्रश्न 21: स्वतंत्र व्यापार (Free Trade) बनाम संरक्षण (Protectionism) के तर्कों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

स्वतंत्र व्यापार के पक्ष में तर्क:

संसाधों का अनुकूलतम आवंटन, प्रतिस्पर्धा से दक्षता में वृद्धि, उपभोक्ताओं को सस्ती और गुणवत्तापूर्ण वस्तुएँ, तथा अंतर्राष्ट्रीय शांति।

संरक्षण के पक्ष में तर्क:

- **शिशु उद्योग तर्क (Infant Industry Argument):** नए घरेलू उद्योगों को शुरुआती दौर में विदेशी प्रतिस्पर्धियों से सुरक्षा की आवश्यकता होती है।
- **रोजगार संरक्षण:** घरेलू उद्योगों को बंद होने से बचाकर रोजगार बनाए रखना।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा:** रक्षा और आवश्यक वस्तुओं के लिए विदेशों पर निर्भर न रहना।

प्रश्न 22: आयात शुल्क (Tariff) के आंशिक संतुलन (Partial Equilibrium) प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: एक छोटे देश में किसी वस्तु पर आयात शुल्क लगाने से निम्नलिखित आंशिक प्रभाव (Partial Equilibrium Effects) उत्पन्न होते हैं:

1. **कीमत प्रभाव (Price Effect):** घरेलू बाजार में वस्तु की कीमत कर की मात्रा के बराबर बढ़ जाती है।
2. **उपभोग प्रभाव (Consumption Effect):** ऊँची कीमत के कारण कुल उपभोग में कमी आती है।
3. **उत्पादन प्रभाव (Production Effect):** ऊँची कीमत से घरेलू उत्पादकों को बढ़ावा मिलता है और घरेलू उत्पादन बढ़ता है।

प्रश्न 23: आयात शुल्क (Tariff) के सामान्य संतुलन (General Equilibrium) प्रभावों को समझाइए।

उत्तर: जब एक बड़ा देश (जो विश्व कीमतों को प्रभावित कर सकता है) आयात शुल्क लगाता है, तो उसके परिणाम पूरे अर्थतंत्र में फैलते हैं:

- **व्यापार की शर्तों का प्रभाव:** बड़ा देश टैरिफ लगाकर विदेशी विक्रेताओं को कीमतें घटाने पर मजबूर कर सकता है, जिससे उसकी व्यापार शर्तें सुधरती हैं।
- **ऑफर कर्व विश्लेषण:** टैरिफ लगाने वाले देश का ऑफर कर्व अंदर की ओर खिसक जाता है।
- **मेटज़लर विरोधाभास (Metzler Paradox):** कुछ दुर्लभ स्थितियों में टैरिफ लगाने के बाद भी घरेलू संरक्षित वस्तु की कीमत गिर सकती है।

प्रश्न 24: आयात कोटा (Import Quota) क्या है? यह टैरिफ से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर: आयात कोटा एक निश्चित समयावधि में आयात की जाने वाली वस्तु की **भौतिक मात्रा** पर कानूनी सीमा है।

कोटा बनाम टैरिफ:

- टैरिफ मूल्य-आधारित (Price mechanism) है, जबकि कोटा प्रत्यक्ष मात्रात्मक नियंत्रण (Quantitative restriction) है।
- टैरिफ से सरकार को निश्चित कर-राजस्व प्राप्त होता है। कोटा से राजस्व तभी मिलता है जब सरकार आयात लाइसेंस की नीलामी करे; अन्यथा लाभ लाइसेंस धारकों (Monopoly Rents) को जाता है।
- विदेशों में कीमतें गिरने पर भी कोटा आयात की मात्रा को नहीं बढ़ने देता (ज्यादा कठोर संरक्षण)।

प्रश्न 25: गैर-शुल्क बाधाएँ (Non-Tariff Barriers - NTBs) क्या हैं? इसके मुख्य प्रकार बताइए।

उत्तर: गैर-शुल्क बाधाएँ वे सभी सरकारी नीतियाँ और नियम हैं (टैरिफ के अलावा) जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिबंधित करती हैं।

प्रमुख रूप:

1. **स्वैच्छिक निर्यात प्रतिबंध (VERs):** समझौते के तहत निर्यातक देश स्वयं निर्यात सीमित करता है।
2. **सैनिटरी एवं फाइटोसैनिटरी (SPS) मानक:** स्वास्थ्य और सुरक्षा मानकों का आड़ लेकर आयात रोकना।
3. **सरकारी खरीद नीतियाँ:** केवल घरेलू कंपनियों से सामान खरीदने का नियम।
4. **जटिल सीमा शुल्क प्रक्रियाएँ:** जानबूझकर कागजी कार्रवाई में देरी करना।

प्रश्न 26: प्रभावी संरक्षण दर (Effective Rate of Protection - ERP) की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: ई. कॉर्डन और बी. बालासा द्वारा विकसित ERP केवल अंतिम वस्तु पर लगाए गए nominal tariff को नहीं, बल्कि कच्चे माल और मध्यवर्ती इनपुट पर लगे करों को शामिल करके **मूल्य संवर्धन (Value Addition)** पर वास्तविक संरक्षण को मापता है।

$$ERP = (g_j - \sum a_{ij} \times t_i) / (1 - \sum a_{ij})$$

यदि इनपुट पर टैरिफ कम और अंतिम उत्पाद पर अधिक है, तो प्रभावी संरक्षण दर nominal tariff से काफी अधिक होगी।

प्रश्न 27: डंपिंग (Dumping - राशिपातन) क्या है? इसके प्रकार और प्रभाव बताइए।

उत्तर: जब कोई उत्पादक अपने माल को विदेशी बाजार में घरेलू बाजार की तुलना में काफी कम कीमत पर (या उत्पादन लागत से भी कम पर) बेचता है, तो उसे डंपिंग कहते हैं।

3 प्रमुख प्रकार (जैकब वाइनर के अनुसार):

- **सतत डंपिंग (Persistent Dumping):** विदेशी बाजार में माँग अधिक लोचदार होने पर स्थायी रूप से कम कीमत रखना।
- **सामयिक डंपिंग (Sporadic Dumping):** अनिफिकैरी अधिशेष (Surplus) को निकालने के लिए अस्थायी डंपिंग।
- **हिंसक/अग्रिय डंपिंग (Predatory Dumping):** विदेशी प्रतिस्पर्धा को समाप्त करके एकाधिकार स्थापित करने हेतु जानबूझकर की गई डंपिंग।

प्रश्न 28: व्यापारिक संघ (Customs Union) के उत्पादन सृजन (Trade Creation) और उत्पादन विचलित (Trade Diversion) प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: सीमा शुल्क संघ (Customs Union) में सदस्य देश आपस में टैरिफ समाप्त कर देते हैं और गैर-सदस्यों के खिलाफ समान बाहरी टैरिफ लगाते हैं। जैकब वाइनर के अनुसार इसके दो प्रभाव हैं:

- **व्यापार सृजन (Trade Creation - सकारात्मक):** जब महुँगे घरेलू उत्पादन का स्थान संघ के किसी अधिक कुशल/सस्ते सदस्य देश का आयात ले लेता है। इससे कल्याण बढ़ता है।
- **व्यापार विचलन (Trade Diversion - नकारात्मक):** जब संघ के बाहर के सबसे सस्ते देश से आयात बंद होकर संघ के भीतर के अपेक्षाकृत महुँगे देश से आयात होने लगता है। इससे कल्याण घटता है।

प्रश्न 29: क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण (Regional Economic Integration) के चरणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: आर्थिक एकीकरण की प्रक्रिया 5 मुख्य चरणों में आगे बढ़ती है:

1. **मुक्त व्यापार क्षेत्र (FTA):** सदस्यों के बीच शुल्क समाप्त, बाहरी देशों के लिए अपनी-अपनी नीति (उदा. NAFTA)।
2. **सीमा शुल्क संघ (Customs Union):** FTA + सभी गैर-सदस्यों के लिए समान बाहरी सीमा शुल्क।
3. **साझा बाजार (Common Market):** सीमा शुल्क संघ + श्रम और पूँजी की स्वतंत्र गतिशीलता।
4. **आर्थिक संघ (Economic Union):** साझा बाजार + साझा मौद्रिक व वित्तीय नीतियाँ (उदा. यूरोपीय संघ)।
5. **पूर्ण राजनीतिक एकीकरण:** सभी देशों की एक ही केंद्रीय सरकार।

प्रश्न 30: यूरोपीय संघ (EU) और साफ्टा (SAFTA) के प्रभावों का संक्षिप्त मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

यूरोपीय संघ (EU): यह आर्थिक एकीकरण का सबसे परिपक्व उदाहरण है। इसमें 27 देश शामिल हैं, जिनमें से अधिकांश 'यूरो' (Euro) मुद्रा का उपयोग करते हैं। इसने आंतरिक व्यापार को अत्यधिक बढ़ावा दिया है और यूरोपीय क्षेत्र को एक वैश्विक आर्थिक शक्ति बनाया है।

साफ्टा (SAFTA): दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) के देशों द्वारा 2004 में हस्ताक्षरित मुक्त व्यापार समझौता। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि के बीच राजनीतिक तनावों और कम पूरकताओं के कारण SAFTA यूरोपीय संघ जैसी सफलता हासिल नहीं कर पाया है।

प्रश्न 31: भुगतान संतुलन (Balance of Payments - BOP) के घटकों और संरचना की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: भुगतान संतुलन एक निश्चित अवधि (आमतौर पर एक वर्ष) में किसी देश के निवासियों और शेष विश्व के बीच होने वाले सभी आर्थिक लेन-देन का क्रमबद्ध विवरण है। यह दो मुख्य खातों में विभाजित होता है:

1. चालू खाता (Current Account):

- दृश्य व्यापार (वस्तुओं का आयात-निर्यात)।
- अदृश्य व्यापार (सेवाएँ जैसे बैंकिंग, पर्यटन, IT)।
- एकपक्षीय अंतरण (उपहार, प्रेषित धन/Remittances)।

2. पूँजी खाता (Capital Account):

- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) एवं पोर्टफोलियो निवेश (FPI)।
- विदेशी ऋण (ECB, व्यावसायिक उधार)।
- बैंकिंग पूँजी और विदेशी मुद्रा भंडार में परिवर्तन।

प्रश्न 32: स्वायत्त (Autonomous) और समायोजक (Accommodating) लेन-देन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

- **स्वायत्त लेन-देन ("Above the Line"):** वे आर्थिक लेन-देन जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में **लाभ कमाने** या व्यक्तिगत कारणों से स्वतंत्र रूप से किए जाते हैं। इनका भुगतान संतुलन के घाटे या अधिशेष की स्थिति से कोई संबंध नहीं होता।
- **समायोजक लेन-देन ("Below the Line"):** वे लेन-देन जो स्वायत्त लेन-देन के कारण उत्पन्न ****भुगतान संतुलन के असंतुलन (घाटे/अधिशेष) की भरपाई करने के लिए**** केंद्रीय बैंक द्वारा किए जाते हैं (जैसे विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग या IMF से ऋण)।

प्रश्न 33: भुगतान संतुलन में असंतुलन (BOP Disequilibrium) के मुख्य कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: भुगतान संतुलन में घाटा उत्पन्न होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

1. **विकासशील व्यय:** विकासशील देश अवसंरचना निर्माण हेतु बड़े पैमाने पर पूँजीगत वस्तुओं का आयात करते हैं।
2. **मुद्रास्फीति (Inflation):** घरेलू कीमतें बढ़ने से निर्यात महँगे और आयात सस्ते हो जाते हैं, जिससे घाटा बढ़ता है।
3. **व्यापार चक्र (Trade Cycles):** मंदी के दौरान विदेशी माँग घटने से निर्यात गिरते हैं।
4. **जनसंख्या वृद्धि:** उपभोग की माँग बढ़ने से आयात बढ़ता है और निर्यात योग्य अधिशेष घटता है।

प्रश्न 34: मार्शल-लर्नर शर्त (Marshall-Lerner Condition) और लोच दृष्टिकोण समझाइए।

उत्तर: लोच दृष्टिकोण यह विश्लेषण करता है कि अपनी मुद्रा कअवमूल्यन (Devaluation) करके भुगतान संतुलन घाटे को कैसे सुधारा जा सकता है।

मार्शल-लर्नर शर्त:

अवमूल्यन केवल तभी भुगतान संतुलन घाटे को कम करने में सफल होगा जब निर्यात की माँग की लोच (e_x) और आयात की माँग की लोच (e_m) का योग 1 से अधिक हो:

$$e_x + e_m > 1$$

यदि $e_x + e_m < 1$ है, तो अवमूल्यन स्थिति को और बिगाड़ देगा।

प्रश्न 35: सिडनी अलेक्जेंडर के अवशोषण दृष्टिकोण (Absorption Approach) का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर: 1952 में सिडनी अलेक्जेंडर ने लोच दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए Keynesian framework पर आधारित अवशोषण दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

$$B = Y - A$$

जहाँ B = व्यापार संतुलन, Y = राष्ट्रीय आय, और A = कुल घरेलू अवशोषण/खर्च ($C + I + G$)।

निष्कर्ष:

भुगतान संतुलन को सुधारने के लिए अवमूल्यन तभी सफल होगा जब यह या तो **राष्ट्रीय आय (Y) को बढ़ाए** या **घरेलू खर्च/अवशोषण (A) को कम करे**।

प्रश्न 36: भुगतान संतुलन का मौद्रिक दृष्टिकोण (Monetary Approach to BOP) क्या है?

उत्तर: रॉबर्ट मुंडेल और हैरी जॉनसन द्वारा विकसित यह दृष्टिकोण भुगतान संतुलन को एक विशुद्ध मौद्रिक घटना मानता है।

मुख्य मान्यता:

भुगतान संतुलन का घाटा तब होता है जब देश में **मुद्रा की पूर्ति (M_s), मुद्रा की माँग (M_d) से अधिक होती है**। जब लोग अतिरिक्त मुद्रा शेष को विदेशों से वस्तुएँ खरीदने में खर्च करते हैं, तो विदेशी मुद्रा भंडार बाहर जाता है। संतुलन तब स्थापित होगा जब मौद्रिक प्राधिकरण क्रेडिट विस्तार को नियंत्रित करे।

प्रश्न 37: स्थिर (Fixed) बनाम परिवर्तनशील (Flexible) विनिमय दर प्रणाली के गुण और दोष बताइए।

उत्तर:

स्थिर विनिमय दर (Fixed Rate):

- **गुण:** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अनिश्चितता कम करती है, सट्टेबाजी पर रोक, और विदेशी निवेश को बढ़ावा।
- **दोष:** अत्यधिक विदेशी मुद्रा भंडार रखने की जरूरत; स्वतंत्र आंतरिक मौद्रिक नीति का त्याग।

परिवर्तनशील विनिमय दर (Flexible Rate):

- **गुण:** भुगतान संतुलन का स्वचालित समायोजन, स्वतंत्र मौद्रिक नीति।
- **दोष:** विनिमय दर में अस्थिरता, सट्टेबाजी और मुद्रास्फीति का जोखिम।

प्रश्न 38: गुस्ताव कैसल के क्रय शक्ति समता सिद्धांत (PPP Theory) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: 1918 में स्वीडिश अर्थशास्त्री गुस्ताव कैसल द्वारा प्रतिपादित।

नियम:

दो स्वतंत्र कागजी मुद्राओं के बीच विनिमय दर दोनों देशों में उनकी **क्रय शक्ति (Purchasing Power)** के अनुपात** द्वारा निर्धारित होती है।

$$\text{Exchange Rate (E)} = P_a / P_b$$

रूप:

- **निरपेक्ष रूप (Absolute PPP):** दोनों देशों में एक ही बास्केट की वस्तुओं की कीमत का अनुपात।
- **सापेक्षिक रूप (Relative PPP):** दो समयावधियों के बीच मुद्रास्फीति की दर में परिवर्तन का अनुपात।

प्रश्न 39: जे-वक्र प्रभाव (J-Curve Effect) की सचित्र व्याख्या कीजिए।

उत्तर: जे-वक्र प्रभाव यह दर्शाता है कि मुद्रा का अवमूल्यन (Devaluation) होने के तुरंत बाद भुगतान संतुलन में कैसे परिवर्तन आता है।

प्रक्रिया:

1. **अल्पकाल में:** पुराने अनुबंधों और माँग की अलोचदार प्रकृति के कारण आयात तुरंत महँगे हो जाते हैं और व्यापार घाटा **पहले से अधिक** गहरा जाता है** (अक्षर 'J' का निचला हिस्सा)।
2. **दीर्घकाल में:** जब उपभोक्ता और उत्पादक नई कीमतों के अनुसार खुद को ढालते हैं (मार्शल-लर्नर शर्त पूरी होती है), तो निर्यात बढ़ते हैं और व्यापार संतुलन में बड़ा **सुधार होता है**** (अक्षर 'J' का ऊपर उठने वाला भाग)।

प्रश्न 40: विदेशी विनिमय बाज़ार (Foreign Exchange Market) के मुख्य कार्य समझाइए।

उत्तर: विदेशी विनिमय बाजार वह स्थान/प्रणाली है जहाँ विभिन्न देशों की मुद्राओं का क्रय-विक्रय किया जाता है। इसके 3 प्रमुख कार्य हैं:

1. **हस्तांतरण कार्य (Transfer Function):** विभिन्न देशों के बीच क्रय शक्ति (मुद्रा) का हस्तांतरण करना।
2. **साख कार्य (Credit Function):** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए अल्पकालिक साख/ऋण उपलब्ध कराना (जैसे Letters of Credit)।
1. **जोखिम से बचाव कार्य (Hedging Function):** भविष्य में विनिमय दर के उतार-चढ़ाव से होने वाले नुकसान से बचने के लिए फॉरवर्ड कॉन्ट्रैक्ट (Forward Contracts) की सुविधा देना।

प्रश्न 41: अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के उद्देश्य, कार्य एवं सफलता का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर: ब्रेटन वुड्स सम्मेलन के तहत 1945 में स्थापित IMF का मुख्यालय वाशिंगटन डी.सी. में है।

प्रमुख कार्य:

- सदस्य देशों को भुगतान संतुलन के अस्थायी घाटे को दूर करने के लिए अल्पकालिक सहायता देना।
- विनिमय दर की स्थिरता बनाए रखना और प्रतिस्पर्धी अवमूल्यन को रोकना।
- अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग और परामर्श प्रदान करना।

मूल्यांकन:

IMF ने कई वित्तीय संकटों (जैसे 1991 में भारत, 1997 में एशियाई संकट) को संभाला है, लेकिन इस पर विकसित देशों के वर्चस्व और कठोर संरचनात्मक समायोजन शर्तों (Structural Adjustment Programs) के लिए आलोचना भी होती है।

प्रश्न 42: विशेष आहरण अधिकार (Special Drawing Rights - SDRs) क्या है? इसे 'पेपर गोल्ड' क्यों कहते हैं?

उत्तर: SDR 1969 में IMF द्वारा बनाई गई एक अंतर्राष्ट्रीय आरक्षित परिसंपत्ति है, जिसका उद्देश्य वैश्विक तरलता (Global Liquidity) की कमी को पूरा करना था।

मुख्य विशेषताएँ:

- यह कोई भौतिक मुद्रा नहीं है, बल्कि IMF के खाते में एक **अंकीय प्रविष्टि (Accounting Entry)** है। इसलिए इसे 'पेपर गोल्ड' (Paper Gold) भी कहा जाता है।
- इसका मूल्य 5 प्रमुख विश्व मुद्राओं के बास्केट से निर्धारित होता है: अमेरिकी डॉलर, यूरो, चीनी युआन, जापानी येन, और ब्रिटिश पाउंड।

प्रश्न 43: विश्व बैंक (World Bank / IBRD) की भूमिका और इसके अंगों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: विश्व बैंक समूह का मुख्य उद्देश्य विकासशील देशों में गरीबी उन्मूलन और दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

विश्व बैंक के 5 प्रमुख अंग:

1. **IBRD:** मध्यम आय वाले देशों को दीर्घकालिक बुनियादी ढांचा ऋण देना।
2. **IDA (अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ):** गरीब देशों को रियायती/शून्य ब्याज पर ऋण देना ('विश्व बैंक की उदार खिड़की')।
3. **IFC (अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम):** विकासशील देशों में निजी क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देना।
4. **MIGA:** गैर-वाणिज्यिक (राजनीतिक) जोखिमों के खिलाफ गारंटी देना।
5. **ICSID:** अंतर्राष्ट्रीय निवेश विवादों का निपटारा करना।

प्रश्न 44: विश्व व्यापार संगठन (WTO) की स्थापना, संरचना एवं कार्यों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: GATT (General Agreement on Tariffs and Trade) के स्थान पर 8वें उरुग्वे दौर की वार्ता के बाद **1 जनवरी 1995** को WTO की स्थापना की गई।

मुख्य कार्य:

- सदस्य देशों के बीच बहुपक्षीय व्यापार समझौतों का कार्यान्वयन।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार विवादों का शीघ्र और निष्पक्ष निपटारा (Dispute Settlement Mechanism)।
- वैश्विक व्यापार बाधाओं (Tariffs and NTBs) को कम करने हेतु मंच प्रदान करना।
- वस्तुओं के साथ-साथ सेवाओं (GATS) और बौद्धिक संपदा अधिकारों का नियमन।

प्रश्न 45: WTO के TRIPS और TRIMS समझौतों का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर:

1. TRIPS (Trade-Related Aspects of Intellectual Property Rights):

इसके तहत भारत को अपने पेटेंट कानून में संशोधन करके 2005 में ****उत्पाद पेटेंट (Product Patent)**** प्रणाली लागू करनी पड़ी। इससे भारतीय जेनेरिक दवा उद्योग पर प्रभाव पड़ा और दवाओं की कीमतें बढ़ने का जोखिम उत्पन्न हुआ, हालाँकि भारत ने अनिवार्य लाइसेंसिंग (Compulsory Licensing) का अधिकार सुरक्षित रखा।

2. TRIMS (Trade-Related Investment Measures):

विदेशी निवेशकों पर स्थानीय सामग्री उपयोग (Local Content Requirement) की शर्तें लगाने पर रोक, जिससे विदेशी निवेश बढ़ा परंतु घरेलू उद्योगों को अधिक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा।

प्रश्न 46: ब्रेटन वुड्स प्रणाली (Bretton Woods System) का उदय और पतन क्यों हुआ?

उत्तर: 1944 में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन के दौरान द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था का निर्माण किया गया।

उदय:

यह एक ****समायोज्य पेग प्रणाली (Adjustable Peg System)**** थी, जिसमें अमरीकी डॉलर को स्वर्ण (\$35 = 1 औंस सोना) से जोड़ा गया था, और अन्य सभी मुद्राओं को डॉलर से जोड़ा गया था।

पतन (1971):

त्रिफिन दुविधा (Triffin Dilemma): वैश्विक व्यापार के लिए अधिक डॉलर की आवश्यकता थी, जिससे अमेरिका का डॉलर शोधन क्षमता पर संकट आ गया। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन द्वारा डॉलर का सोने में परिवर्तन रोकने की घोषणा के साथ यह प्रणाली ध्वस्त हो गई।

प्रश्न 47: अंकटाड (UNCTAD) की भूमिका और विकासशील देशों के लिए इसके योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर: UNCTAD (United Nations Conference on Trade and Development) की स्थापना 1964 में विकासशील देशों के व्यापार और विकास के हितों की रक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र के एक अंग के रूप में की गई थी।

मुख्य योगदान:

- **सामान्यीकृत प्राथमिकताओं की प्रणाली (GSP):** विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के निर्यातों को बिना पारस्परिक शर्तों के कम टैरिफ की छूट दिलवाना।
- प्राथमिक वस्तुओं की कीमतों में स्थिरता के लिए एकीकृत कार्यक्रम (Integrated Programme for Commodities) चलाना।
- विकासशील देशों पर चढ़े विदेशी ऋण के पुनर्गठन और राहत पर कार्य।

प्रश्न 48: प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

प्रकृतिप्रबंधन व नियंत्रणगतिशीलता (Hot Money)

भौतिक परिसंपत्तियों (कारखानों, कंपनियों) में दीर्घकालिक निवेश।	शेयर बाजार, बॉन्ड या प्रतिभूतियों में वित्तीय निवेश।	
निवेशक को कंपनी के प्रबंधन में प्रत्यक्ष नियंत्रण मिलता है।	प्रबंधन पर कोई नियंत्रण नहीं होता (केवल लाभांश/ब्याज से मतलब)।	
स्थिर, इसे आसानी से तुरंत वापस नहीं निकाला जा सकता।	अत्यधिक अस्थिर ('Hot Money'), संकट में तुरंत देश से बाहर जा सकता है।	

प्रश्न 49: एशियाई विकास बैंक (ADB) के कार्यों और भारत में इसकी भूमिका की समीक्षा कीजिए।

उत्तर: Asian Development Bank की स्थापना 1966 में हुई थी, जिसका मुख्यालय मनीला (फिलिपिंस) में स्थित है।

मुख्य कार्य:

एशिया-प्रशांत क्षेत्र में गरीबी घटाना और बुनियादी ढांचे (सड़क, बिजली, शहरी विकास) के निर्माण के लिए ऋण, अनुदान और तकनीकी सहायता प्रदान करना।

भारत में भूमिका:

भारत ADB का एक प्रमुख संस्थापक सदस्य और बड़ा उधारकर्ता है। ADB ने भारत में स्मार्ट सिटीज, दिल्ली-मेरठ RRTS Corridor, औद्योगिक गलियारों (Industrial Corridors), तथा नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रश्न 50: बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNCs) के विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर: बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वे निगम हैं जिनका संचालन अपने गृह देश के अलावा एक या अधिक अन्य देशों में होता है।

सकारात्मक प्रभाव:

- विदेशी पूँजी का आगमन और विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि।
- आधुनिक तकनीक, उन्नत प्रबंधन और R&D का हस्तांतरण।
- विशाल स्तर पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार का सृजन।

नकारात्मक प्रभाव:

- घरेलू लघु एवं कुटीर उद्योगों का विनाश।
- मुनाफे को स्वदेश वापस भेजना (Profit Repatriation), जिससे भुगतान संतुलन पर दबाव बनता है।
- पर्यावरण का शोषण और स्थानीय संस्कृति व आर्थिक संप्रभुता पर प्रभाव।